Eh – यीशु को महासभा द्वारा आधिकारिक तौर पर अस्वीकार कर
दिया गया है | 1

– Save This Page as a PDF–

यीशु को महासभा द्वारा आधिकारिक तौर पर अस्वीकार कर दिया गया है



ईसा मसीह के समय में, मौखिक कानून के कारण फरीसी
यहूदी धर्म का इज़राइल राष्ट्र पर दबदबा था (देखें Ei – मौखिक कानून)। बीस शताब्दियों तक यहूदियों ने एक “नेतृत्व परिसर” के तहत काम किया था, जिसका अर्थ था कि यहूदी नेतृत्व जिस भी रास्ते पर जाए, लोग निश्चित रूप से उसका अनुसरण करेंगे। हम इसे तनाख के इतिहास में अक्सर देखते हैं। जब राजा ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था, तब उन्होंने उसका अनुसरण किया; और जब राजा ने वह काम किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, तो उन्होंने भी उसका अनुसरण किया। जब आज विश्वासियों द्वारा गवाही दी जाएगी, तो कई यहूदी कहेंगे, “रब्बी इस पर विश्वास क्यों नहीं करते?”

जब उन्होंने यीशु द्वारा किए गए चमत्कारों को देखा, तो जनता ने खुद से पूछा: क्या यह डेविड का पुत्र हो सकता है (मत्ती १२:२३)? जनता प्रश्न पूछने को तैयार थी, लेकिन वे स्वयं इसका उत्तर देने को तैयार नहीं थे। इस “नेतृत्व परिसर” के कारण, जनता ने सोचा कि यह तय करना महान महासभा की जिम्मेदारी थी कि मेशियाच आया था या नहीं। और दुखद रूप से महान महासभा ने कहा “नहीं!”

परिणामस्वरूप, महान महासभा ने दानव कब्जे के आधार पर मसीह को अस्वीकार कर दिया, और बाद में जनता चिल्लाएगी: उसका खून हम पर और हमारे बच्चों पर हो (मत्ती २७:२५)। मनुष्यों की परंपराओं (मरकुस ७:८) में उनके विश्वास के कारण, वे मसीहा से चूक गए। इस अस्वीकृति के परिणामस्वरूप, यहूदी नेतृत्व और यहूदी लोगों को उसके वापस आने से पहले उसे वापस आने के लिए कहना होगा (प्रकाशित Ev पर मेरी टिप्पणी देखें – दूसरे आगमन का आधार)। इस्राएल राष्ट्र ऐसे बिंदु पर पहुंच गया था जहां से वापस लौटना संभव नहीं था।